रात्रि क्लास 13-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

दीपक सभी की जग रही है। बैटरी चार्ज हो रही है कुछ न कुछ। अनेक प्रकार की संस्थाएं हैं सारी दुनिया में। जिसको सतसंग कहते हैं। वास्तव में सतसंग है नहीं। सारी दुनिया की बात नहीं। भारत की ही करें। जब कि तुमको देवी-देवता धर्म स्थापन करना है तो सारी दुनिया का प्रश्न नहीं उठता। भारत में जो सतसंग हो रही है वह है नहीं। सच्च अर्थात सच्च बोलने वाला है। सच्च बोलने वाला ही सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। वह तो एक ही है। बाकी द्वापर से जो सतसंग आदि होते हैं वह है झूठखण्ड। भक्ति मार्ग माना ही झूठ मार्ग। भक्तिमार्ग है दुर्गति मार्ग। झूठ मार्ग। यह है सदगति मार्ग। इनको सच्चा सतसंग कहेंगे। तुम बच्चों का यह ज्ञान सारी दुनिया में कोई नहीं बता सकता है। तुम अपना स्वराज्य स्थापन कर रहे हो। तुमको मत मिलती है श्रेष्ठ की। ऐसी मत किसको मिलती ही नहीं है। कोई भी मनुष्य बाप रचयिता को जानते ही नहीं हैं। न जानने कारण रचना के आदि मध्य, अन्त को भी नहीं जानते। यह है प्राचीन भारत का अर्थात पुराना ते पुराना सो नया ते नया। इस समय है नया। जो फिर पुराना हो जावेगा। प्राचीन भारत का योग जो भगवान ने सिखाया जिससे पैराडाईज स्थापन हुआ वह सभी जानने चाहते हैं। सो तो तुम बता ही सकते हो। तुमको ही भगवान बाप पढ़ाते हैं। बाप टीचर बन पढ़ाते हैं। सदगुरु बन सदगति भी करते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का क्लास कहें वा ब्रह्माकुमारी विश्व-विद्यालय कहें। वा गीता पाठशाला कहें बात एक ही है। वही गीता का ज्ञान है। विश्व के सदगति के लिये आबू में बाप दे रहे हैं। उनका यादगार यहां ही आबू में है। भगवान ने शिरोमणि गीता भी यहां ही सुनाई। सब की सदगति भी यहां की है इसलिये यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है। सभी खण्डों में प्राचीन खण्ड भी भारत ही है। उच्च खण्ड भारत ही है। सर्व पदों से उच्च पद भी बाप यहां ही देते हैं। इनकी बहुत महिमा है। बाबा लिखते भी हैं पदमापदमभाग्यशाली तो सौभाग्यशाली तो कामन बात है। बाप कहते हैं तुम हो पदमापदमभाग्यशाली। पदम देवताओं के पैर में लगाते हैं। देवता बनाने वाला है बाप। पदमापदम भाग्यशाली बनाते हैं। ऐसे और कब हो नहीं सकता। एक ही बार नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश होता है। तुम देवता बनते हो तो सृष्टि नई जरूर चाहिए। इसलिये पुरानी सृष्टि का विनाश भी जरूर होना है। तो तुम बच्चों को कितनी बेफिक्र होनी चाहिए। जानते हो हम निमित बने हुये हैं सारी दुनिया को पावन बनाने। पावन दुनिया को ही पैराडाईज कहा जाता है। मूलवतन में तो सभी आत्मायें पावन रहती हैं। यह सारी ड्रामा ही मूल वतन और स्थूल वतन का है। मूलवतन में तुम आत्मायें रहते हो। यहां आकर पार्ट बजाते हो। पार्ट पूरा कर फिर वापिस जाते हो। सूक्ष्मवतन का कुछ है नहीं ड्रामा में। सिर्फ थोड़ा सा है तुम बच्चों के लिये तीन देवतायें भी दिखाये जाते हैं। सायलेन्स मुवी टाकी। मूवी का सिर्फ सा होता है। यह है नई बात। और सतसंगों में तो कामन बात है। इस पुरुषोत्तम संगम युग का तो किसको भी पता नहीं है। अभी बाप ज्ञान सुना रहे हैं। कृष्ण को बाप थोड़े ही कह सकेंगे। कृष्ण बाप तो शिव बाबा कहां चला जाये। तो भक्ति मार्ग है ही वाहियात मार्ग। ड्रामा तो है ना। सीढ़ी उतरते नीचे आकर पटपड़े हो। आधा कल्प तुम सुखधाम में जाते हो बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। यह हार जीत का खेल है। तुम बच्चों के लिये तो बहुत ही कामन बात है। माया रावण से हराते हो। राम बाप फिर जीत पहनाते हैं बहुत सहज है। बाप को याद करो तो पाप कट जाये। सभी धारणा नहीं कर सकते हैं। इसलिये नम्बरवार राजधानी बन जाती है। यह है नई बात। यहां जो तुम सुनते हो कहां और जगह नहीं सुन सकते। सिवाय ब्र०कु० पाठशाला के तुम ब्राह्मण वारस हो ना। औरों में भी नम्बरवार समझते हैं। खुशी का पारा चढ़ता है बात समझ में नहीं आती है तो मुरझाये जाते हैं। बाकी सतसंग है ही एक। बाकी है लतसंग। गुरु लोग लात मार देते हैं तो नीचे आकर पड़ते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग में ले जाता हूं फिर नर्क में तुमको कौन ढकेलता है? वही गुरु लोग। सदगुरु एक आकल मूर्त। बाकी गुरु है अनेक। जिनको काल खा जाता है।

अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।